15

आदमी जिसने सच बोला

(2 राजाओं 6:24-7:20)

संसार की सबसे मूल्यवान चीज़ों में से एक सच्चाई है। सुलैमान ने लिखा है, ''सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं'' (नीतिवचन 23:23)। कुछ चीज़ें किसी भी कीमत पर बेची नहीं जानी चाहिए जिनमें से एक सच्चाई है। डब्ल्यू. जे. डीन और एस. टी. टैसवल ने टिप्पणी की है:

> सच्चाई को सबसे कीमती चीज़ के रूप में मानो, और इसे पाने के लिए हर तकलीफ़, कीमत या कुर्बानी दे दो और जब यह मिल जाए तो इसे सुरक्षित रखो; इसे सांसारिक लाभ या आनन्द के बोध की खातिर बेचो नहीं; इसका फैसला न करो या इसका मज़ाक न उड़ाओ यानी ''इसे बेचो नहीं,'' किसी भी कीमत पर इससे अलग न हो।[1]

यह कह कर कि ''सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा'' (यूहन्ना 8:32) यीशु ने सच्चाई के महत्व पर ज़ोर दिया।

हर सच्चाई कीमती है (देखें इफिसियों 4:25), परन्तु जिस सच्चाई पर इस पाठ में हम ध्यान लगाएंगे वह परमेश्वर का वचन है। भजन लिखने वाले ने यहोवा से कहा, ''तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं'' (भजन संहिता 119:151; देखें 2 शमूएल 7:28; भजन संहिता 119:160)। यूहन्ना 17 में यीशु ने अपनी प्रार्थना में कहा, ''तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17; देखें 2 कुरिन्थियों 6:7; गलातियों 2:5; कुलुस्सियों 1:5; 2 तीमुथियुस 2:15; याकूब 1:18)। हमें परमेश्वर की सच्चाई को ''खरीदना'' चाहिए और ''बेचना'' बिल्कुल नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं चाहिए!

इस पाठ का शीर्षक ''आदमी जिसने सच बोला'' है। 2 राजाओं से लिया गया हमारा वचन अध्याय 6 का अन्तिम भाग और पूरा 7 अध्याय। हम पक्का नहीं बता सकते कि पवित्र आत्मा ने एलीशा के जीवन की हर लिखित घटना क्यों प्रकट की, पर उसने हमें इस के बारे में संदेह में नहीं रखा। 7:18-20 से आगे देखें। पहली नज़र में लगता है कि यह आयतें दोहराव ही हैं, पर आत्मा पाठकों से यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मुख्य बात को न भूलें। मुख्य शब्द यही हैं जिनके साथ संक्षिप्त भाग का आरम्भ होता है: ''परमेश्वर के भक्त ने जैसा राजा से यह कहा था, ... वैसा ही हुआ'' (7:18)। लोग एलीशा की बातों पर सवाल कर सकते हैं, उन पर संदेह कर सकते हैं या यहां तक कि उनका मज़ाक उड़ा सकते हैं; परन्तु एलीशा ने परमेश्वर की सच्चाई बताई और परमेश्वर की सच्चाई हमेशा सच होती है!

सच्चाई की उपेक्षा करने से सच्चाई बदल नहीं जाती (6:24-29)

त्रास्दी: वास्तविकता

हमारी कहानी का आरम्भ होता है, ''परन्तु इसके बाद अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी

समस्त सेना इकट्ठी करके, शोमरोन पर चढ़ाई कर दी और उसको घेर लिया'' (आयत 24)। ''इसके बजाय'' वापस आयत 23 की ओर संकेत करता है: ''इसके बाद अराम के दल इस्राएल के देश में फिर न आए।'' शांति के एक समय के बाद (हमें नहीं मालूम कि यह कितनी देर तक का था) बेन्हदद ने इस्राएल के विरुद्ध एक बड़ा आक्रमण आरम्भ किया। उसकी सेना सामरिया नगर की ओर तक पहुंच गई जहां इस्राएल के राजा का महल था। इस समय इस्राएल का राजा सम्भवतया योराम था। जोसेफस के अनुसार योराम खुले मौदान में बेनहदद से भेंट करने को डरता था क्योंकि उसकी सेनाएं अरामी राजा की सेनाओं से कहीं कम थीं। उसने तुरन्त लड़ाई का जोखिल उठाए बिना अपने आपको राजधानी के भीतर बन्द कर लिया।[2]

अरामियों द्वारा नगर को घेर लेने पर, ''शोमरोन में बड़ा अकाल पड़ा'' (आयत 25क)। यह 4:38 और 8:1 वाला अकाल ही हो सकता है, या इन शब्दों का अर्थ केवल इतना हो सकता है कि घेराबंदी के दौरान नगर के लोगों को खाने के लाले पड़ गए। जो भी हो बेन्हदद की नीति नगर को अधीनता में भूखा रखने की थी।

घेराबंदी को दिन, हफ्ते बीतते गए जब तक नगर के लोग हताश नहीं हो गए ''अन्त में एक गदहे का सिर चान्दी के अस्सी टुकड़ों [चांदी के लगभग दो पौंड[3]] में और कब की चौथाई भर कबूतर की बीट पांच टुकड़े चान्दी (लगभग 2 औंस) तक बिकने लगी'' (6:25ख)। व्यवस्था के अनुसार गधा ''अशुद्ध'' जानवर था और इस्राएलियों को इसे खाने की मनाही थी (देखें लैव्यव्यवस्था 11:2-8; व्यवस्थाविवरण 14:4-8)। गधे का सिर लाश का सबसे अवांछनीय भाग होगा, जिसमें कम मांस होता है। तौभी यह काफ़ी महंगे दाम में खरीदा जाता था।

''कब की चौथाई'' एक पैंटर (1/8 गैलन की माप विशेष) के लगभग था।[4] ''कबूतर की बीट'' की अभिव्यक्ति को ज्यों का त्यों लिया जा सकता है, क्योंकि भंयकर अकाल के समयों में खाने के लिए बीट इकट्ठी किए जाने का पता चलता है ...;[5] पर बहुत ही निकम्मा खाना होने के संकेत के लिए इसे प्रतीकात्मक अर्थ में भी लिया जा सकता है।[6] NIV में ''बीज के दाने'' और JB ''जंगली प्याज'' है। परिस्थिति बुरी थी, इतनी बुरी कि आम तौर पर मनुष्य के खाने के योग्य समझी जाने वाली चीज़ें इतने महंगे दामों पर बिकती थी जिन्हें केवल अमीर लोग ही खरीद सकते थे।

इससे भी बुरा अभी आना था। एक दिन योराम शहरपनाह के ऊपर टहल रहा था (2 राजाओं 6:26क), सम्भवतया किलेबंदी की समीक्षा और शत्रु की गतिविधि को देखने के लिए। उसके टहलते हुए एक महीला पुकार उठी, ''हे प्रभु, हे राजा, बचा'' (आयत 26ख)। राजा ने समझा कि वह खाना मांग रही है। उसने कहा, ''यदि यहोवा तुझे न बचाए, तो मैं कहां से तुझे बचाऊं? क्या खलिहान में से, या दाखरस के कुण्ड में से?'' (आयत 27)। NCV के अनुवाद में सुझाव है, ''यदि यहोवा तेरी सहायता नहीं करता, तो मैं कैसे कर सकता हूं? क्या मैं खलिहान से [जिसमें कोई अनाज नहीं है] या दाखरस के कुण्ड से [जिसमें कोई दाखरस नहीं है] सहायता ले सकता हूं?''

अन्त में राजा ने उस स्त्री से पूछा, ''उस ने उत्तर दिया, इस स्त्री ने मुझ से कहा था'' (आयत 28क)। (NIV में केवल ''क्या बात है?'' है।) बात यह निकली कि वह स्त्री खाना ही नहीं ढूंढ़ रही थी बल्कि उसकी इच्छा वह पाने की थी जिसे वह ''न्याय'' समझती थी। मैं उसकी कहानी

को छोड़कर आगे बढ़ना पसन्द करता (बच्चों पर अत्याचार की कहानियां मुझे बहुत विचलित करती हैं), और यह उस निराशा को दिखाता है जिसकी जकड़ में नगर था:

> उस ने उत्तर दिया, इस स्त्री ने मुझ से कहा था, मुझे अपना बेटा दे, कि हम आज उसे खा लें, फिर कल मैं अपना बेटा दूंगी, और हम उसे खी खाएंगी। तब मेरे बेटे को पकाकर हम ने खा लिया, फिर दूसरे दिन जब मैं ने इस से कहा कि अपना बेटा दे कि हम उसे खा लें, तब इस ने अपने बेटे को छिपा रखा (आयतें 28ख, 29)।[7]

परमेश्वर के लोगों में आदमखोर होने का यह पहला विवरण है। इस प्रकार ही निर्शसंता 587 ई.पू. में नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम में कब्जा करने के समय भी हुई थी (विलापगीत 2:20; 4:10; यहेजकेल 5:10)। जोसेफस ने भी 70 ई. पू. में टाइटस द्वारा यरूशलेम पर अन्तिम कब्जे के दौरान अवमाननीय व्यवहार की बता लिखी है।[8]

त्रासदी: कारण

इतनी भयानक बातों का होने का कारण क्या था: घेराबंदी, अकाल और भयंकर परिणाम *पाप* के कारण थे जिसमें *मूर्तिपूजा* भी थी। लोग परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को नहीं रख पाए। मूसा ने इस्राएलियों को चेतावनी दी थी कि यदि इस्राएली लोग अपनी वाचा को पूरा नहीं करते तो उनके शत्रु उनके सब नगरों में उन पर कब्जा कर लेंगे (व्यवस्थाविवरण 28:52)। ''तब घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझ को डालेंगे, तू अपने निज जन्माए बेटे-बेटियों का मांस जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देगा, खाएगा'' (आयत 53)। फिर मूसा ने लोगों को परमेश्वर का संदेश दिया:

> ... यदि तुम ... भी मेरी न सुनोगे, और मेरे विरुद्ध चलते ही रहोगे, तो मैं अपने न्याय में तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा, और तुम्हारे पापों के कारण तुम को सातगुणी ताड़ना और भी दूंगा और तुम को अपने बेटों और बेटियों का मांस खाना पड़ेगा (लैव्यव्यवस्था 26:27-29)।

शोमरोन के लोगों ने परमेश्वर की सच्चाई की उपेक्षा की थी पर इसलिए यह सच्चाई बदल नहीं गई। उन्हें अभी भी परिणाम भुगतने पड़ने थे। होशे नबी ने कहा, ''वे वायु बोते हैं, और वे बवण्डर लवेंगे'' (होशे 8:7क)। पौलुस ने लिखा कि ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा'' (गलातियों 6:7ख)।

आज संसार में ऐसे लोगों की भरमार है जो परमेश्वर की सच्चाई की उपेक्षा करते हैं। कई इसकी उपेक्षा इस कारण करते हैं क्योंकि वे जान बूझकर अज्ञानी रहते हैं। शैतान का एक झूठ यह है कि बाइबल अनावश्यक है और इसके नियमों को मानने का कोई महत्व नहीं है। शोमरोम की अकथनीय स्थितियों को देखने से पता चलता है कि सच्चाई की उपेक्षा करने के परिणाम भयंकर होते हैं। पौलुस ने उन के विषय में लिखा जो ''मन की कठोरता के कारण परमेश्वर जीवन से अलग हैं'' (इफिसियों 4:18)। यदि *आप* परमेश्वर की स्पष्ट सच्चाइयों की उपेक्षा करते आ रहे हैं तो, मेरी प्रार्थना है कि आपको यह पता चलने से पहले कि सच्चाई की उपेक्षा करने से सच्चाई बदल नहीं जाती, पाप आपके जीवन का विनाश न करे!

सच्चाई पर क्रोधित होने से सच्चाई बदल नहीं जाती (6:30-33)

राजा की निराशा

''उस स्त्री की ये बातें सुनते ही राजा'' निराशा से भर गया और उस ने ''अपने वस्त्र फाड़े'' (आयत 30क; 5:7 से तुलना करें)। वह शहरपनाह के ऊपर था इस कारण नीचे खड़े लोग उसके कामों को देख सकते थे (आयत 30ख)। ''जब लोगों ने देखा, तब उनको यह देख पड़ा कि वह भीतर अपनी देह पर टाट पहिने है'' (आयत 30ग)।

टाट बोरी से बना और बोरे बनाने (जैसा कि नाम से ही पता चलता है) के लिए इस्तेमाल होता था। जब मैं लड़का था तो हम ऐसे कपड़े को ''बरलप'' कहते थे। हम टाट के बने बोरों को ''सन के बोरे'' कहते थे।[9] टाट को कपड़े बनाने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाता था क्योंकि खुरदरा होने के कारण यह बदन पर चुबता था। बाइबल के समयों में कई बार लोग दीनता, शोक, और/या पश्चात्ताप के प्रतीक के रूप में अपने शरीरों पर टाट पहनते थे (देखें उत्पत्ति 37:34; 2 शमुएल 3:31; 2 राजाओं 19:1)।

राजा ने टाट क्यों पहना था। इसका उत्तर देने के लिए हमें कहानी में वापस जाना पड़ेगा। ''यह विवरण ... संक्षिप्त और अण्डाकार है।''[10] जो विवरण में हम मान सकते हैं कि एलीशा ने पहले राजा का ईश्वर की प्रेरणा से एक संदेश दिया था। ऐसे संदेश में निश्चिय ही इस प्रकार की सच्चाइयां होंगी:

- ''तेरी परेशानियां यहोवा की ओर से तेरे पाप के परिणाम के रूप में हैं।''
- ''यदि लोग अपनी बुराई से मन फिरा लें (तुझ से, यानी अपने राजा से आरम्भ करके), तो यहोवा उन्हें बचा लेगा।''

एलीशा ने अरामियों के आगे समर्पण करने के विरुद्ध भी सलाह दी होगी: ''थोड़ा रुक जाओ, और यहोवा तुम्हें छुड़ा लेगा।'' इन पंक्तियों के साथ संदेश से समझाया गया होगा कि राजा ने अपने शरीर पर टाट क्यों ओड़ा हुआ था–पश्चात्ताप के चिह्न के रूप में, इसमें क्या बुराई थी? अगली घटनाएं इस बात का संकेत देती हैं कि उसने मन बिल्कुल नहीं फिराया था। यानी उसने अपने पापों या उनके परिणामों की ज़िम्मेदारी नहीं ली थी। पाप के लिए गम्भीरतापूर्वक दुख जताए बिना मन फिराव की बाहरी अभिव्यक्तियां बेकार और किसी काम की नहीं थी। (मेरे ध्यान में ''आय एम सोरी'' कहकर गुदगुदाते एक बच्चे का उदाहरण आता है जो यह शब्द अपनी मां के कहने पर कहता है चाहे उसे इस बात का कोई अफ़सोस नहीं है।)

स्त्री की भयभीत करने वाली कहानी से राजा कांप गया। मैं उसके यह सोचने की कल्पना कर सकता हूं, ''मुझे समझ नहीं आता! मैंने अपने शाही वस्त्र के नीचे यह खाज वाला, चुबने वाला वस्त्र पहनकर अपने आपको छोटा किया पर फिर भी यहोवा ने उन्हें बचाया नहीं है। वास्तव में स्थिति पल पल खराब होती जाती है!''

राजा का निर्णय

राजा ने क्या किया? क्या उसने यह निर्णय लिया, ''हम अराम और बेतेल में से मूर्तियां

निकाल देंगे [1 राजाओं 12:28, 29], बाल की पूजा को सदा के लिए छोड़ देंगे और केवल यहोवा की आराधना करेंगे''? यदि उसने लोगों को मन फिराने और प्रार्थना करने के लिए कहा होता तो प्रभु उन्हें आशीष देता (देखें 2 इतिहास 7:14)। परन्तु ऐसी किसी प्रतिक्रिया के बजाय योराम प्रचारक पर ही क्रोधित हुआ: ''तब वह बोल उठा, यदि मैं शापात के पुत्र एलीशा का सिर आज उसके घड़ पर रहने दूं, तो परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करे [उसकी मां के शब्दों से तुलना करें (1 राजाओं 19:2)]'' (2 राजाओं 6:31)। इस पहले राजा ने एलीशा को ''हे मेरे पिता'' (आयत 21) कहा था और उसकी सलाह पर ध्यान दिया (आयतें 22, 23), परन्तु अब वह उसे मार डालना चाहता था। नबी ''पूरे इस्राएल में सबसे निर्दोष और सबसे कीमती [सिर] था,''[11] पर राजा ने उसे उसके धड़ से अलग करने का ठान लिया।

स्पष्टतया राजा ने उनकी आपदाओं का ज़िम्मेदार एलीशा को ठहराया (एलीशा एलिय्याह से कहीं उसके पिता की बातें देखें [1 राजाओं 18:17])। क्या उसे एलीशा की सलाह में कमी मिली या आश्चर्यकर्म करने वाले नबी को उससे अधिक करना चाहिए था जो वह कर रहा था? क्या राजा परेशान होकर केवल किसी को निशाना बना रहा था? जो भी कारण थे, देश की समस्या के लिए जिम्मेदारी को स्वीकार करने के बजाय राजा को नाराज होना और किसी दूसरे के ऊपर आरोप लगाना आसान लगा।

योराम ने एक हत्यारा भेजा। उसने उस आदमी को बताया कि एलीशा सामरिया में कहां रहता है और उसे हत्या की आज्ञा दी (2 राजाओं 6:32ख)। हत्यारे के जाने के थोड़ी देर बाद राजा ने स्वयं एलीशा के घर जाने का निर्णय लिया (आयत 31घ), सम्भवतया यह सुनिश्चित करने के लिए कि काम सही हो गया है।[12] उसके साथ उसका एक शाही अधिकारी था (7:2)।

उसी दौरान एलीशा नगर से आए अगुओं ''पूर्वियों'' के साथ अपने घर में बैठा हुआ था (6:32क)। यह महत्वपूर्ण है कि यह लोग राजा के साथ होने के बजाय शायद वे शांति की तलाश में थे या सलाह मांगने के लिए आए थे। वे प्रार्थना सभा में भी हो सकते हैं।

यहोवा ने एलीशा को राजा के खूनी आदेश से चौकस कर दिया। नबी ने यह ईश्वरीय संवाद पुरनियों तक पहुंचा दिया: ''देखो, इस खूनी के बेटे ने किसी को मेरा सिर काटने को भेजा है'' (आयतें 32ग)। ''का पुत्र'' बाइबल में ''के स्वभाव वाला'' होने के विचार को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किया गया है इसलिए ''खूनी के बेटे'' का अर्थ ''यह खूनी'' हो सकता है। परन्तु इस मामले में राजा खूनी का बेटा *था*। उसका पिता अहाब यहोवा के नबियों के हत्याकांड के अलावा (देखें 1 राजाओं 18:13) नाबोद की हत्या में शामिल था (देखें 1 राजाओं 21:8-14)। योराम स्वभाव और कुल दोनों से ''खूनी का बेटा''[13] था।

एलीशा ने पुर्नियों ने कहा, ''जब वह दूत आए, तब किवाड़ बन्द करके रोके रहना। क्या उसके स्वामी के पांव की आहट उसके पीछे नहीं सुन पड़ती?'' (2 राजाओं 6:32घ)। उसे राजा के पहुंचने तक जल्लाद को घर से बाहर रखने में सहायता चाहिए थी। फिर उसने राजा के साथ तर्क करने का प्रयास करना था।

एलीशा के बात करते-करते कातिल[14] आ पहुंचा (आयत 33क), पर स्पष्टतया पुरनियों ने उसे अन्दर आने से रोक लिया। (मैं उन बूढ़े आदमियों की कल्पना कर सकता हूं, दरवाजे की ओर झुके हुए उनके कंधों से उनके मुंह मरोड़े जाने की कल्पना कर सकता हूं जबकि बाहर

जल्लाद दरवाजे पर शोर मचाते हुए कह रहा है, ''मुझे अन्दर आने दो! मैं यहां राजा के काम से आया हूं!'')

आयत 33 के अन्त में है, ''और उस ने कहा, 'यह विपत्ति यहोवा की ओर से है, अब मैं आगे कहा यहोवा की बाट क्यों जोहता रहूं?''' व्याकरण का नियम ''उस'' का अर्थ दूत/खूनी देगा, पर अधिकतर लेखक एक मत हैं कि इन शब्दों का एलीशा का जवाब संकेत देता है कि यह बात राजा ने कही (देखें 7:17ख; आयतें 1, 2 पर ध्यान दें)। NIV और हिन्दी में ''और राजा कहने लगा, 'यह विपत्ति यहोवा की ओर से है।''' CJB में है ''दूत राजा का यह संदेश लेकर आया। ...''

जब राजा और अधिकारी अन्त में पहुंच गए, तो राजा और नबी की थोड़ी बातचीत हुई। राजा अभी भी क्रोध में था, स्पष्टतया। मैं उसके लाल चहेरे, उभरी हुई आंखें और उसके माथे की त्यौरियां चढ़ी हुई देखता हूं। उसके यह कहते हुए कि ''यह विपत्ति यहोवा की ओर से है; अब मैं आगे को यहोवा की बाट क्यों जोहता रहूं?'' क्रोध सुनाई देता है। उसकी शिकायत कुछ इस प्रकार से थी: ''हमारी परेशानियों का जिम्मेदार यहोवा [हमारा अपना पाप नहीं] है! एलीशा, तूने वायदा किया था कि यहोवा हमें छुड़ा लेगा पर हालात तो सुधरे नहीं बल्कि बुरे हो रहे हैं। मैंने बहुत धीरज धरा, पर अब मैं धीरज नहीं रख सकता!''

परिस्थिति से राजा क्रोधित था और नबी पर क्रोधित, पर इससे यह सच्चाई नहीं बदल गई कि लोगों का अगुआ होने के कारण उनकी विपत्ति का जिम्मेदार वही था। आज कुछ लोग परमेश्वर की सच्चाई सुनाए जाने पर क्रोध से जवाब देते हैं, पर इससे सच्चाई बदल नहीं जाती। पौलुस ने गलातिया के लोगों से पूछा था, ''तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा वैरी बन गया'' (गलातियों 4:16)। जो मेरोन जो कैथोलिक धर्म से मसीही बना था, साफ़ बोलने वाला प्रचारक था। अपनी विशेष मज़बूत बात के बाद वह जोड़ लेता, ''मैं तुम्हारा शत्रु नहीं हूं- क्योंकि मैंने तुम्हें सच बताया है!''

सच्चाई पर संदेह करना सच्चाई को बदल नहीं देता (7:1-6)

प्रतिज्ञाओं की घोषणा हुई

माहौल खतरे से भर गया। एलीशा परिस्थिति को न सम्भालता तो उसका सिर उसके धड़ से अलग कर दिया जाता। उसने फुर्ती से राजा को आश्वस्त किया कि उसने अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी, केवल एक और दिन चाहिए और यहोवा मामले को सुलझा देगा। नबी ने इसे इस प्रकार कहा: ''यहोवा का वचन सुनो, यहोवा यों कहता है, कि कल इसी समय शोमरोन के फाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल में और दो सआ जव भी एक शेकेल में बिकेगा'' (आयत 1)। ''सआ भर मैदा'' लगभग छह कुआर्ट, जबकि ''दो सआ जव'' लगभग आधा बुशल थे (CJB)। दी गई कीमती घेराबंदी से पहले की कीमतों से थोड़ी अधिक थी। गधे का सिर इस समय एलीशा की बात से कि मैदा छह कुआट में बिकेगा से अस्सी गुणा अधिक था (6:25; 7:1)! नबी के साथ परिस्थितियों में यह नाटकीय परिवर्तन चौबीस घण्टों के अन्दर आ जाएगा!

यह एक चौंकाने वाली और स्पष्ट भविष्यवाणी थी। शत्रु अभी भी नगर को घेरे हुए था; भूख

से मर रहे बच्चे अभी भी खाने को तरस रहे थे। मानवीय दृष्टिकोण से एलीशा की बात के सच होने का कोई कारण नहीं था। बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है, ''यदि कोई भविष्यवाणी जो पूर्णतया पूरी होनी असम्भव लगे कोई थी तो यही थी!''[15]

शाही अधिकारी ने जो राजा के साथ आया था डांट लगाई, ''सुन, चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोले, तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी?'' (7:2ख), इसको दूसरे शब्दो में कहें तो उसने कहा: ''यदि परमेश्वर आकाश के झरोखे खोल भी दे जैसे उसने नूह के समय में किया था [उत्पत्ति 7:11 से तुलना करें] और बारिश की जगह अनाज की वर्षा करे, तौभी ऐसा नहीं हो सकता!'' यह उन अवसरों में से एक है जब आदमी को अपना मुंह बंद रखना चाहिए। अधिकारी नबी की बातों पर संदेह ही नहीं कर रहा था बल्कि वह परमेश्वर की सामर्थ में अपना संदेह व्यक्त कर रहा था। यीशु के शब्द इस आदमी पर लागू हो सकते हैं: ''हे निर्बुद्धियों, और भविष्यवक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो'' (लूका 24:25)।

एलीशा ने इस संदेहवादी को देखा और यह कहा: ''सुन, तू यह अपनी आंखों से तो देखेगा, परन्तु उस अन्न में से कुछ खाने न पाएगा'' (2 राजाओं 7:2ख)–''एक और भविष्यवाणी जो ... पूरी होनी असम्भव लगी।''[16] उस समय राजा और उसके सहायक को चले जाना चाहिए था। राजा संदेहवादी होगा, पर वह यह देखने के लिए कि क्या होने वाला है एक और दिन प्रतीक्षा करने को तैयार था। मैं उस अधिकारी से अपने आप में बुड़-बुड़ाने की कल्पना करता हूं, ''देखेगा, पर खाएगा नहीं। ... 'देखेगा, पर खाएगा नहीं। ...''देखेगा पर खाएगा।' इस पागल बूढ़े का यह क्या अर्थ हो सकता है?''

प्रतिज्ञाएं पूरी हुईं

एलीशा की प्रतिज्ञाएं कैसे पूरी हुई होंगी? शेष कहानी यही बताती है। आयत 3 में दृश्य बदलकर सामरिया नगर से बाहर चला जाता है। भूख से मर रहे, एक बात से चकित कि वे क्या करें ''चार कोढ़ी फाटक के बाहर थे'' (आयत 3)। अन्त में उन्होंने अपने आपको शत्रु के रहम पर छोड़ने का निर्णय लिया (आयत 4)। वे शत्रु के डेरे में चले गए पर यह देखकर हैरान रहे कि वह तो उजड़ा हुआ है (आयत 5)।

> क्योंकि प्रभु ने अराम की सेना को रथों और घोड़ों की और भारी सेना की सी आहट सुनाई थी, और वे आपस में कहने लगे थे कि, सुनो, इस्राएल के राजा ने हित्ती और मिस्री राजाओं को वेतन पर बुलवाया है कि हम पर चढ़ाई करें (आयत 6)।

अपना सब कुछ छोड़कर अरामी भाग गए थे (आयत 7)। कोढ़ियों ने जब उनकी छावनी को खाली देखा तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने पेट भर खाया और छावनी में लूट पाट करने लगे (आयत 8)। फिर उनके विवेक ने आवाज़ दी (आयत 9) और वे पहरेदारों के पास जाकर उनसे कहने लगे कि शत्रु भाग गया (आयत 10)। राजा को समाचार मिला (आयत 11)। पहले तो उसे विश्वास नहीं हुआ (आयत 12), परन्तु जब उसने पता लगाया तो यह बात सच निकली कि शत्रु भाग गया है (आयतें 13–15)!

तुरन्त खबर फैल गई और फाटक खोल दिए गए। लोग नगर में से भागकर छावनी की ओर

गए (आयत 16क)। इतनी रसद छोड़ी गई थी कि यह मैदे का एक माप एक शेकेल में और जो के दो माप एक शेकेल में बिक रहे थे, बिल्कुल वैसे ही जैसे एलीशा ने भविष्यवाणी की थी (आयत 16ख)।

उस भविष्यवाणी का क्या अर्थ है कि वह संदेहवादी अधिकारी सस्ते भोजन को देखेगा तो सही पर उसे खाएगा नहीं? राजा ने भीड़ के दृश्य की कल्पना की थी कि जब लोगों को पता चला कि शत्रु ने छावनी खाली कर दी है। इसलिए उसने ''राजा ने उस सरदार को ... फाटक का अधिकारी ठहराया'' (आयत 17क) ताकि व्यवस्था बनी रहे। उस अधिकारी ने इसे बड़ा सम्मान माना होगा। मैं उसे फाटक पर खड़े, अपने शाही लिबाज़ में ठाठ से, अपने हाथ ऊपर उठाए और खामोशी से यह कहते हुए देखने की कल्पना कर सकता हूं, ''व्यवस्था बनाए रखो। चलते चलो। भागो मत।'' मैं ज़ोर ज़ोर से उसकी आवाज़ सुनता हूं: ''मैंने कहा 'व्यवस्था बनाए रखो!' गड़बड़ करने की कोई आवश्यकता नहीं सबको मिलेगा!'' फिर लोगों के उसकी ओर भगदड़ मचने पर मैं उसे बड़े जोश से हाथ हिलाते हुए देखता हूं और उसके शब्दों में मुझे आतंक सुनाई देता है: ''ओडर! ओडर! ओड। ...'' आयत कहती है कि वह फाटक में लोगों के पांव के नीचे दबकर मर गया (आयत 17ख)। मैं आग और अन्य खतरों से लोगों की भीड़ को भागने की कोशिश करते हुए लोगों के पिस जाने के विवरण से मेरे रौंगटे खडे हो जाते हैं।

इस प्रकार वह अधिकारी ''परमेश्वर के भक्त के उस वचन के अनुसार'' (आयत 17ग) मर गया। ''परमेश्वर के भक्त के उस वचन के अनुसार'' शब्द को रेखांतिक कर लें। एलीशा ने कहा था कि संदेह करने वाला देखेगा तो सही पर खाएगा नहीं, और बिल्कुल यही हुआ। सच्चाई पर संदेह करना सच्चाई को बदल नहीं देता क्योंकि यह फिर भी सच्चाई ही रहती है।

कइयों को सच्चाई की बात मानना बढ़कर सच्चाई पर मज़ाक उठाना आसान लगता है। जब बाइबल यह बताती है कि इस्राएलियों को बाबुल की दासता में क्यों ले जाया गया था तो यह कहती है कि ''वे परमेश्वर के दूतों को ठट्ठों में उड़ाते, उसके वचनों को तुच्छ जानते, और उसके नबियों की हंसी करते थे। निदान यहोवा अपनी प्रजा पर ऐसा झुंझला उठा, कि बचने का कोई उपाय न रहा'' (2 इतिहास 36:16)। नये नियम में पतरस ने लिखा कि ''अन्तिम दिनों में हंसी ठट्ठा करने वाले आएंगे, जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे'' (2 पतरस 3:3)। संदेह करने वालों ने पुनरुत्थान (देखें प्रेरितों 17:32) से लेकर द्वितीय अगमन (देखें 2 पतरस 3:3, 4) तक की बाइबल की हर सच्चाई का मज़ाक उड़ाया है।[17]

परमेश्वर के वचन का मज़ाक उड़ाने वालों को लगता है कि वे समझदार हैं, पर बाइबल उन्हें ''मूर्ख'' कहती है (देखें नीतिवचन 14:9)। याकूब ने संदेह करने वाले की चंचलता के बारे में लिखा है, ''संदेह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है'' (याकूब 1:6)। अंत में ठट्ठा उड़ाने वालों का ठट्ठा परमेश्वर ही उड़ाएगा (देखें नीतिवचन 3:34)। कोई बिना परिणाम भुगते परमेश्वर और उसके वचन का मज़ाक नहीं उड़ा सकता (देखें गलातियों 6:7, 8)। जब बाइबल कोई सच्चाई बताती है तो इस पर *विश्वास करें*। आप इसे समझते न भी हों तौ भी इस पर विश्वास करें। यदि यह मानवीय तर्क के विपरीत जाती लगे तौभी इस पर विश्वास करें (देखें यशायाह 55:8, 9)। सच्चाई पर संदेह करने से सच्चाई बदल नहीं जाती यह सच्चाई ही रहती है।

''सच्चाई तो सच्चाई है और सच्चाई-सच्चाई ही है'' (7:18-20)

लगेगा कि यह कहानी का अन्त है पर परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक ने समाप्त नहीं किया:

> परमेश्वर के भक्त ने जैसा राजा से यह कहा था, कि कल इसी समय शोमरोन के फाटक में दो सआ जब एक शेकेल में, और एक सआ मैदा एक शेकेल में बिकेगा, वैसा ही हुआ। और उस सरदार ने परमेश्वर के भक्त को, उत्तर देकर कहा था, कि सुन चाहे यहोवा आकाश में झरोखे खोले तौभी क्या ऐसी बात हो सकेगी? और उस ने कहा था, सुन, तू यह अपनी आंखों से तो देखेगा, परन्तु उस अन्न में से खाने न पाएगा। सो उसके साथ ठीक वैसा ही हुआ, अतएव वह फाटक में लोगों के पांवों के नीचे दबकर मर गया (आयतें 18-20)।

जैसा परिचय में कहा गया था, लेखक नहीं चाहता था कि पाठक कहानी की मुख्य बात से जूझें, इस कारण उसने चरम को दोहराया (तुलना करें आयत 16 और 18)। महत्वपूर्ण शब्द हैं कि ''परमेश्वर के भक्त ने जैसा कहा था, वैसा ही हुआ'' (आयत 18; देखें आयत 17ग)। नबी की परीक्षा इस बात में होती है कि उसकी भविष्यवाणियां खरी हैं या नहीं (व्यवस्थाविवरण 18:21, 22); एलीशा की भविष्यवाणी पूरी हो गई। राजा के लिए एलीशा की बातों पर विश्वास करना कठिन था और शाही अधिकारी ने उनका ठट्ठा उठाया था, पर वे फिर भी पूरी हुईं।

एक कवि ने एक बार लिखा था कि ''गुलाब तो गुलाब ही होता है और गुलाब गुलाब ही रहता है।''[18] इन शब्दों से हमें कुछ मिले या न पर इस बात से प्रभावित होते हैं कि गुलाब वास्तव में गुलाब *ही* रहता है। अपने विषय में उसी कवि के शब्दों का इस्तेमाल करते हुए हम कह सकते हैं, ''सच्चाई तो सच्चाई है और सच्चाई-सच्चाई ही रहती है।'' अज्ञानता इसे नज़रअन्दाज़ कर सकती है, क्रोध इसे बुरा मान सकता है, और संदेह इसकी कीमत कम कर सकता है पर है यह सच्चाई ही! सच्चाई सूर्य के प्रकाश की तरह है: बादल इसे छुपा सकता है, रात के आने से लग सकता है कि यह गायब हो गया, पर अंधे को यह दिखाई नहीं देता पर फिर भी यह चमक रहा है, क्योंकि सूर्य का प्रकाश तो सूर्य का प्रकाश ही है।

बाइबल में बिलाम नामक एक घिनौने पात्र ने एक बार यह सच्चाई बोली थी: ''ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उस ने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उस पूरा न करे?'' (गिनती 23:19)। जब परमेश्वर जब वचन में कोई बात कहता है आप उस पर विश्वास कर सकते हैं। जैसे शाही अधिकारी ने पाया था, *भला होता* आप विश्वास कर लेते, ''सच्चाई तो सच्चाई है और सच्चाई-सच्चाई ही रहती है।''

सारांश

इस शृंखला के दूसरे पाठ में हमने ज़ोर दिया है कि एलीशा का संदेह दोहरा था:

- परमेश्वर, उसके दूत और उसके संदेश का आदर करो, तो तुम्हें आशीष मिलेगी।
- परमेश्वर, उसके दूत, और उसके संदेश का आदर न करो तो तुम्हें श्राप मिलेगा।

इस पाठ में हमने संदेश के दूसरे भाग अर्थात परमेश्वर और उसके दूत का आदर न कर पाने

के परिणामों के नाटकीय प्रदर्शन को देखा है। हम ने सामरिया के लोगों द्वारा सामान्य अर्थ में और विशेष रूप से एलीशा की बातों का मज़ाक उड़ाने वाले अधिकारी की त्रासदी में उन परेशानियों को देखा है। इस पाठ के अन्त में अपने आप से पूछें कि परमेश्वर के वचन की सच्चाई के सम्बन्ध में *आप* कहां खड़े हैं, आप इसका आदर करते हैं, इस पर विश्वास करते और इसकी बात मानते हैं; या आप इसका अपमान करते हैं और इसका ठट्ठा उड़ाते हैं और इसकी बात मानने में असफल रहते हैं? बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों के अनुभवों से सबक लेता है। घेरे में आए सामरिया को देखें और मन फिराकर परमेश्वर की ओर लौटने का निश्चय अभी करें!

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. जे. डीन एंड एस. टी. टेलर-टेसवेल, ''प्रोवर्ब्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 9, *प्रोवर्ब्स, इक्लेसियेसट्स, सांग्स ऑफ़ सॉलोमन,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 443. [2]जोसेफस, *एंटिक्विटीस* 9.4.4. [3]यह जानकारी NIV के मेरे संस्करण के फुटनोट से ली गई। आप किसी और से बात कर सकते हैं जो कीमती धातुओं का व्यवसाय कर रहा हो जिससे आपको चांदी की वर्तमान कीमत का पता चल सके। [4]यह जानकारी NASB वाले मेरे संस्करण के फुटनोट्स से ली गई है। [5]जोसेफस *वार्स* 5.13.7. [6]सी. एफ. केल एंड एफ. डेलिश, ''1 और 2 किंग्स,'' *कमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट,* अंक 3, *1 एंड 2 किंग्स, 1 एंड 2 क्रोनिकल्ज़, एज्रा, नहेमायाह, एस्तर* (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 328. अन्य संभावनाओं में गोबर का सुझाव दिया गया है। जानवरों की विष्ठा में आम तौर पर कुछ अनपचा खाना रह जाता है, इस कारण शायद मंशा इसे खोदकर इसमें से खाने योग्य दाने ढूंढ़ना था या शायद गोबर इंधन के रूप में इस्तेमाल के लिए फैंका गया था। [7]यह सम्भव है यह शैतानी समझौता होने से पहले दोनों बच्चे कुपोषण से मर गए हो, पर यह भी एक भयानक कहानी है। [8]जोसेफस *वार्स* 6.3.4. [9]आस्ट्रेलिया में ऐसी सामग्री को ''हेसियन'' (बोरी) कहा जाता है। ऐसे शब्द का इस्तेमाल करें जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। [10]जी. रॉलिंसन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *1 एंड 2 किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 125.

[11]मैथ्यू हेनरी, *कमैंट्री ऑन द होल बाइबल,* संपा. लेसली एफ. चर्च (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1961), 408. [12]कई लेखकों का मत है कि योराम ने अपना मन बदल लिया और उसके अपने आदेश को निरस्त करने के लिए हत्यारे के पीछे गया, परन्तु राजा के अपना मन बदलने का मुझे कोई प्रमाण दिखाई नहीं देता। एलीशा ने जो योराम के मन की बात जानता होगा, उसे ''खूनी का बेटा'' कहा जबकि राजा उसके घर की ओर आ रहा था (2 राजाओं 6:32)। [13]केल एंड डेलिश, 329. [14]कई अनुवादों में ''दूत'' की जगह ''राजा'' है (देखें RSV; REB; NLT; TEV)। ''दूत'' और ''राजा'' के लिए इब्रानी शब्द मिलते-जुलते हैं। [15]जेक्स बर्टन कॉफ़मैन एंड थेलमा बी. कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन सेकंड किंग्स,* जेक्स बर्टन कॉफ़मैन कमैंट्रीज़, दि हिस्टोरिकल बुक्स, अंक 6 (अबिलेन, टैक्ससः ए.सी.यू. प्रैस, 1992), 87. [16]वही, 88. [17]इससे बाइबल की उन सच्चाइयों के लिए जिन्हें आपके यहां मज़ाक किया जाता या संदेह किया जाता है, लागू करें। [18]गर्टरुड स्टेन (1874-1946), *सेक्रेड एमिली* (1913); जॉन बार्टलेट, *बार्टलेट'स फेमिलियर कोटेशंस,* 16वां संस्क., संपा. जस्टिन कप्लेन (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन, एंड कं., 1992), 627 में उद्धृत।